विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – षष्ठ **दिनांक -२५ -०६ - २०२१**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज सी, सी, ए,के अन्तर्गत ध्यानचंद जी के बारे में अध्ययन करेंगे।

जब हिटलर ने दिया ध्यानचंद को जर्मनी से खेलने का प्रस्ताव

"हॉकी के जादूगर" के नाम से प्रसिद्ध मेजर ध्यानचंद भारत के सर्वश्रेष्ठ हॉकी खिलाड़ी थे. उनका जन्मदिन २९ अगस्त राष्ट्रीय खेल दिवस 'National Sports Day' के रूप में मनाया जाता है. उनके चमत्कारिक खेल को देखकर अक्सर लोगों को संदेह हो जाता था कि कहीं उनकी हॉकी में चुंबक तो नहीं लगा हुआ है क्योंकि बॉल मानो उनकी हॉकी से चिपक जाती और वे गोल पर गोल करते चले जाते थे.

यह घटना १९३६ के ओलंपिक हॉकी वर्ल्ड कप फाइनल की है. फाइनल में भारत का मुकाबला जर्मनी से था. इस मैच को देखने के लिए स्टेडियम २५००० से भी ज्यादा दर्शकों से भरा हुआ था. उस दिन विशेष रूप से जर्मनी के तानाशाह हिटलर भी स्टेडियम में मैच देखने के लिए मौजूद थे.

उस मैच में भारत ने जर्मनी को ०८-०१ से बुरी तरह हराकर ओलंपिक हॉकी का गोल्ड मैडल जीत लिया था. ०८ गोल में से ०३ गोल मेजर ध्यानचंद ने दागे थे. अपनी टीम की करारी हार को देखकर हिटलर बौखला गया था और मैच बीच में छोड़कर चला गया था.

उस रात हिटलर ने ध्यानचंद को अपने कमरे में बुलवाया और पूछा, "ध्यानचंद हॉकी खेलने के अलावा और क्या करते हो?"

मेजर ध्यानचंद ने उत्तर दिया, "सर! मैं Indian Army में Lance Naik हूँ."

इस पर हिटलर बोला, "ध्यानचंद, अपने देश को छोड़ दो और जर्मनी की तरफ़ से खेलो. देखो तुम्हारे देश ने तुम्हें क्या दिया है? अब भी सूबेदार ही हो. जर्मनी से खेलो मैं तुम्हें Field Marshal बना दूंगा."

हिटलर के प्रस्ताव को ठुकराते हुए मेजर ध्यानचंद बोले, "सर, माफ़ कीजियेगा. आपका यह प्रस्ताव मैं स्वीकार नहीं कर सकता. मुझे आगे बढ़ाना मेरे देश की ज़िम्मेदारी नहीं है, बल्कि अपने देश को आगे बढ़ाना मेरी ज़िम्मेदारी है. इसलिए मैं तो अपने देश की ही तरफ़ से खेलूंगा."

यह कह वह हिटलर के कमरे से चले आये. ऐसे देशभक्त थे हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद.